प्रेम की छाया श्रद्धा

एक बार एक आश्रम के महंत पास में रहते एक दूसरे संत से मिलने गए। वहां जाकर देखा तो आश्रम में अपूर्व शांति थी। शिष्यों के हृदय में गुरु के प्रति बहुत आदर और श्रद्धा की भावना थी। किसी को कुछ कहने और नियंत्रण करने वाला कोई भी नहीं था फिर भी सभी अपना-अपना काम गहरी आस्था के साथ कर रहे थे।

मिलने आये महंत ने बातों-बातों में पूछ लिया कि आपके शिष्यों के हृदय में गहरी आस्था और श्रद्धा का कारण क्या है? मेरे यहां तो मुश्किलों का पारावार नहीं है। शिष्य तो बहुत हैं लेकिन उनके हृदय में मैं ऐसा भाव उत्पन्न नहीं कर सका, इसके लिए मुझे क्या करना चाहिए?

उन्होंने महंत से बिना उत्तेजित हुए, शांत मुद्रा में मात्र इतना ही कहा, 'आज शाम को आपके यहां भोजन करने के लिए आता हूँ...उस समय शांति से बात करेंगे।'

- ब्र. कु. गंगाधर

शाम हुई, बरसात के दिन होने के कारण हर समय बरसात लगी ही हुई थी। बारीश हो ही रही थी, तो भी वे संत भोजन करने के लिए पहुंच गये। रास्ते में कीचड़ होने के कारण पग गन्दे हो गए थे। वे अधिपति के निवास पर पहुंचकर द्वार पर खड़े हो गये। आश्रम के अधिपति महंत ने पत्नी को आवाज़ दिया कि जल्दी से थोड़ा पानी लेकर आइये, बहुत समय के बाद अपने मित्र आये हैं, कीचड़ के कारण पग गन्दे तो होने ही थे।

अंदर से पत्नी ने तेज़ आवाज़ में कहा, 'वो कुआं कहां दूर है। ले जाओ उन्हें कुएं पर और पग धुलवा दो। अगर ज़रूरत पड़े तो स्नान भी करा देना। सुबह पानी भरने को कहा था तब कहां चले गये थे!'

दोनों साथ-साथ कुएं पर पहुंचकर पग धोकर वापिस आ गये। भोजन पूरा हुआ। भोजन करने के पश्चात् आये हुए संत ने कहा, अभी बरसात ज़ोर से हो रही है, अभी मैं जा रहा हूँ, कल आप मेरे यहां खाना खाने आना। वहां पर शांति से बात करेंगे।

दूसरे दिन बारिश तो चालू ही थी। फिर भी वे महंत संत के आश्रम पर पहुंच गये। कीचड़ के कारण पैर गन्दे थे, कपड़े भी गीले हो गए थे। संत के निवास पर पहुंचकर वे द्वार पर खड़े हो गये। दौड़कर संत ने उनका स्वागत किया। बाहर से ही पत्नी को आवाज़ दिया कि जल्दी से घी की मटकी लेकर आइए। आवाज़ सुनते ही पत्नी घी की मटकी लेकर दौड़ते हुए आई। संत ने कहा कि अपने मित्र वर्षों बाद अपने यहां आए हैं। बहुत अच्छे मेहमान हैं, उनके पैर पानी से क्यों धोएं? घी से ही उनका पैर धोकर साफ कर दें। पत्नी ने एक क्षण का विलम्भ किये बिना ही अतिथि के पांव धोकर व स्वयं की साड़ी के पल्ले से पोंछ कर साफ कर दिया।

आश्रम में भोजन संत ने पूरा किया। फिर आराम के क्षणों में आये हुए महंत से पूछा 'अब पूछना है कुछ या उत्तर मिल गया?' नतमस्तक होकर महंत सिर्फ इतना ही बोले; 'उत्तर मिल गया। अब कुछ पूछने जैसा रहा ही नहीं है।' विचारक कथा के संदर्भ में कहते हैं 'सच्चा प्रेम व्यक्ति के हृदय में स्वत: स्फूर्त श्रद्धा पैदा कर देता है। जब घर के भीतर ही श्रद्धा और प्रेम का अभाव होता है तो बाहरी जगत में भी इन्हें प्राप्त करना कठिन हो जाता है।

श्रद्धा या विश्वास के लिए सामने से कुछ करना नहीं पड़ता। ये प्रेम का प्रतिफल है। और जहां श्रद्धा नहीं वहां प्रेम जी भी नहीं सकता।

दांपत्य का मूल आधार प्रेम है और जहां प्रेम है वहां श्रद्धा छाया की तरह आ जाती है। गुरुपत्नी के मन में भी प्रश्न न उठा हो, ऐसा नहीं है। उनके मन में भी क्षणभर के लिए ऐसा हुआ होगा कि पति ने पानी के बदले दूध मांगा हो तो समझ में आता लेकिन ये तो घी से धोने की बात थी। तर्क की दृष्टि से ये बात स्वीकारने जैसी न थी। तो भी मन को चुप कराकर पत्नी ने श्रद्धा के सहारे घी की मटकी उलट दी।

निराशा से उबारता है साक्षी भाव

सब कुछ प्राप्त करने के बाद भी लोग निराशा में घिर जाते हैं। जिन्हें मनचाहा न मिले वे निराश हो जाएं यह तो समझ में आता है पर मनचाहा मिलने पर भी बेचैनी बनी रहती है। ऐसा व्यावसायिक क्षेत्र के लोगों के साथ होता है। नौकरी या धंधा करते हुए कभी लगे कि सब कुछ ठीक चल रहा है, फिर भी भीतर निराशा घेर रही है तो कुछ प्रयोग करिएगा। पहली बात, विस्तार में विश्वास बढ़ा दें। यानी यह सोचें कि इस समय जहां आप हैं, आपका जो भी काम है उसको और कैसे फैलाया जाए, विकास-विस्तार किया जाए। दूसरी बात, हमेशा सर्वश्रेष्ठ लोगों के आस-पास रहने का प्रयास करें। स्पर्द्धा भी करें तो अच्छे लोगों से करें। जिस क्षेत्र में घटिया लोग हों उनसे बचें। तीसरी बात, हमेशा ऊंचे लक्ष्य रखें और इस बात को दिमाग में बैठा लें कि हमारा भविष्य उज्जवल है। चौथी बात, छोटी-मोटी गलतियों, लोगों की विपरीत टिप्पणियों को नज़रअंदाज़ करें। ये सारे बाहर के काम हैं। निराशा घेरने लगे तो कुछ देर के लिए अकेले में बैठकर आंख बंद करें, गहरी सांस लेते रहें और फिर भीतर जो घट रहा है उसको देखें। भीतर आप चार बातों से गुज़रेंगे। सबसे पहले विचार आएंगे, उसके बाद व्यक्ति दिखने शुरु होंगे, तीसरे चरण में स्थितियां दिखेंगी। ये स्थितियां भी ऐसी होंगी कि आपको लगेगा आपका इनसे कोई लेना-देना नहीं है। इनसे घबराएं नहीं, एक फिल्म की तरह देखें, तब चौथे चरण में एक शून्य आएगा। यह है साक्षी भाव। भीतर का यह अभ्यास बाहर के अभ्यासों में मदद करेगा, करके देखिए।

दिनचर्या में एक्युरेट रहना ब्राह्मणों की शान

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

बाबा को हम मीठे बच्चे अच्छे लगते हैं, हमको मीठा बाबा अच्छा लगता है। बाबा मीठा क्यों लगता है? क्या करता है जो मीठा लगता है? विचार करो तो नशा चढ़ेगा। बाबा बताता है तेरी मुट्ठी में क्या है? बाबा ने इतना ज्ञान दिया है। मुरली के आधार से पुरानी दुनिया को पीठ है, ऐसे पीछे मुड़कर देखते भी नहीं हैं। सामने लक्ष्मी-नारायण का लक्ष्य है, मन बाबा में लगा हुआ है, अच्छा लगता है, राइट टाइम पर राइट क्या सोचना है, और कुछ सोचने की ज़रूरत ही नहीं है। सोचना माना कुछ अंदर से क्लीयर समझ में नहीं आता है। जिसको क्लीयर समझ में आता है वो सोचता नहीं है। बाबा ने कहा ज्ञान का सिमरण करो और स्मृति में रहो। इन दो शब्दों में ही कितनी गुह्यता और रमणीकता है, कोई सोचने की बात नहीं है पर क्लीयर है। सारे ज्ञान का सार है मन-मनाभव। स्व-दर्शन चक्र हमको पूरा अहिंसक बनाता है, स्वर्ग में आने लायक बनाता है। सारा चक्र बुद्धि में आता है कि पूरे 84 जन्मों में कैसे पार्ट बजाया है। सारे चक्र में हमारा वन्डरफुल पार्ट रहा है। बड़े साधू, सन्त, महात्मायें समझते हैं इस दुनिया के चक्र से छूट जायें, मोक्ष को पायें क्योंकि यह सुख काग विष्टा समान है। यह शब्द ही देखो कैसे हैं? भारत की महिमा तो अपरम्पार है, यहां स्वर्ग में कितने सुख वैभव होते हैं। जैसे बाप की महिमा है वैसे भारत की महिमा है। एक तो हम भारतवासी हैं, दूसरा आदि सनातन धर्म की स्थापना परमात्मा बाप द्वारा जो यहां हुई है, हो रही है, उसके बीच अधर्म का नाश करने कराने के निमित्त हैं।

यह देवतायें ऊंचे ते ऊंचे हैं, पवित्र हैं, पर वो हम ही थे यह अभी समझ है। तो अभी पहले जैसा घण्टी बजाके पूजा नहीं करेंगे। अभी क्या सोचना है, क्या करना है वो बाबा क्लीयर बता रहा है इसलिए बाबा बड़ा मीठा लगता है। बच्चा है या बूढ़ा है, पढ़ा लिखा है या न पढ़ा हुआ है, पर दोनों अच्छी तरह दिल से बाबा कहते हैं तो कितना अच्छा लगता है। भगवान स्वयं पढ़ाये और हम सामने बैठकर पढ़ाई पढ़ें, सुनें तो इस गुप्त खुशी से आत्मा को ताकत मिलती है और इससे बुद्धि की समझ क्लीयर हो जाती है। बाबा ने ऐसा स्वदर्शन चक्र फिराना सिखाया है, सारे चक्र में कुछ भी पार्ट बजाते यहां तक पहुंचे हैं। पर कभी दुनियावी मनुष्यों की तरह दु:खी नहीं हुए होंगे क्योंकि इस समय हमने बाबा के बच्चे बनने के बाद कोई ऐसे कर्म नहीं किये हैं, सदा ही अच्छे बच्चे बनकर अच्छे कर्म किये हैं। ''मैं'' का ज्ञान बड़ा मीठा है, ऐसे ही मैं नहीं कहते लेकिन अंदर अपने को देखना है। कोई भी पुराने विचार या दूसरों के विचारों से हम उसी मुआफिक नहीं चलेंगे। जो बाबा की श्रीमत है उसी अनुसार चलेंगे। जो बाबा कहता है उसी पर चलेंगे, बाबा ने टाइमटेबल बनाके दिया है, तो टाइम टू टाइम दिनचर्या प्रमाण सुबह से रात्रि तक एक्युरेट रहना, चलना, करना यह भी एक ब्राह्मणों की शान है। जैसे याद में भोजन बनायें, वैसे याद में भोजन स्वीकार करें तो यह सब डायरेक्शन हैं। डायरेक्शन को अमल में लाने वाले की नैचुरल जो नेचर है वह सुंदर बन जाती है क्योंकि यज्ञ के डायरेक्शन को प्रैक्टिकल में लाया। फिर ऐसे ही हमें भी अपनी प्रैक्टिकल चलन से दूसरों को सिखाना है।

कर्मयोगी ही माया पर विजयी

दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

अभी बाबा का विशेष योग के ऊपर बहुत अटेन्शन है। तो हरेक अपने से पूछे कि सचमुच मेरा जीवन क्या है? योगी जीवन है? कर्म करते कर्मयोगी हैं? तो योग का बहुत इन्ट्रेस्ट चाहिए क्योंकि कर्मयोग भी तो बाबा ने सिखाया। हम कहेंगे हम तो बहुत बिज़ी रहते हैं, सारा दिन काम ही इतना है, काम में ही बिज़ी रहते हैं। लेकिन बाबा ने कर्मयोग सिखाया है, कोई ऐसा नहीं कहे क्या करें, बहुत बिज़ी हैं, इसलिए कर्मयोग हमारा मशहूर है। तो योग के ऊपर अटेन्शन है? हम कहेंगे क्या करेंगे सारा दिन काम में लगे हुए हैं, अरे! करने वाले नहीं हैं, कर्मयोगी हैं। नहीं तो सारा दिन क्या है! शान्त शान्त, चुप चुप रहके क्या करेंगे। यज्ञ सेवा उसका भी तो पुण्य है ना बहुत। तो योग के ऊपर सबका अटेन्शन होना चाहिए क्योंकि ब्रह्माबाबा को देखो, शिवबाबा की प्रवेशता हुई योग शुरु हो गया। चलते-फिरते बाबा दृष्टि देता था, उससे लगता था कि योग में है। योग की आकर्षण आती थी। ऐसे हम भी कर्म करें, चलो सफाई कर रहे हैं, भले हाथ में सफाई का कपड़ा है लेकिन बुद्धि कहां है? बाबा में। यह चेकिंग चाहिए, भले कामकाज में रहें वो तो करना है, नहीं तो खाली बैठके और बुद्धि इधर-उधर जायेगी, काम में फिर भी बिज़ी तो हैं। यज्ञ सेवा तो है लेकिन कर्मयोगी हैं। हम सिर्फ कर्म नहीं करते हैं। अगर माया आ गयी तो...माया का काम है आना, हमारा काम है भगाना। हमारे पास आने में उसको भी खुशी होती है। अच्छा आ गई, उसको भगाओ और क्या? अभी यहां कोई पंछी आदि आ जाये तो हम क्या करेंगे? यही सोचते रहेंगे क्यों आया? क्यों आया? कि उसको भगायेंगे? अगर कोई ऐसी बातें आ भी जाती हैं जो काम की नहीं हैं, यह पेपर होते हैं, पेपर तो आयेंगे ना! बिना पेपर के पास होंगे क्या! जो होशियार होते हैं वो कहते हैं पेपर आवे, जल्दी जल्दी पूरा हो और जो सुस्त होगा वो कहेगा अभी 15 दिन और मिल जायें तो बहुत अच्छा है। तो ऐसे तो नहीं हैं ना।

अरे! भगवान मेरा हो गया, कम बात है क्या? भगवान क्या कहता है, मेरा बच्चा मेरा बच्चा, हम भी कहते हैं मेरा बाबा मेरा बाबा। कम भाग्य है क्या! अभी योग के ऊपर अटेन्शन। भले कर्म कर रहे हैं लेकिन बाबा को क्यों भूलें! और सर्व संबंध हैं, एक संबंध भी नहीं, तो बाबा कहते हैं बस योगी जीवन में चलते चलो। कोई भी बात आवे, योग की शक्ति के आगे ठहर नहीं सकती है।

दिल में बाबा को बिठा दिया है बस। दिल में बाबा और बाबा की बातें ही बातें भरी हुई है ना, तो कैसे दूसरी बातें आयेंगी। हमने बाबा को अपने दिल में बिठाया है, बाबा ने हमको अपने दिल में बिठाया है। कुछ भी कर रहे हो, योग नहीं छूटे। अभी तो अनुभवी बन गये हैं ना। वाह हमारा जीवन! खुशी कितनी होती है!

हम मायापति हो गये, माया क्या है उसको समझ लिया है। भले आवे, वह अपना खेल दिखाती है, दिखाये, हम बाबा को क्यों भूलें। दिल में और बातें आती हैं माना बाबा को दिल में नहीं बिठाया है। दिल खाली है ही नहीं, बाबा बैठा है तो और बातें आ ही नहीं सकती हैं।

एक बार बाबा ने कहा था कई बच्चे कहते हैं हमको कोई साथी नहीं है, अकेले हैं। बाबा ने कहा मैं दिल में बैठा हूँ वो भूल गई और कहती हो मैं अकेली हूँ। दिल में बाबा को नहीं बिठाया है? अकेली नहीं हो, बाबा ने कहा, कभी नहीं समझो मैं अकेली हूँ। अरे, दिल में बाबा बैठा है। कुछ भी हो, बाबा यह करूँ, बाबा यह होता है, बस बाबा से ही बातें करते रहें इसलिए दिल में बिठाया है। उनसे ही बैठूँ, उनसे ही खाऊँ, उनसे ही सब कुछ करूँ। भले एक बाबा है लेकिन कमाल तो बाबा की है, सबको इतना ही अपनेपन का अनुभव कराता है।